Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

पंकज मित्र की कहानियों में भूमंडलीकरण का आर्थिक प्रभाव 'क्विजमास्टर' कहानी के सन्दर्भ में

नीता पाण्डेय

शोध छात्र

श्री गोविन्द गुरु यूनिवर्सिटी गोधरा, गुजरात

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

समकालीन कथा परिदृश्य में अपनी 'प्रभा से चकित - चल' करने वाले कहानीकार पंकज मित्र जिस दौर में अपनी पहली कहानी लेकर आए थे, वह दौर आर्थिक, सामाजिक, राजनितिक और धार्मिक चारों क्षेत्र में बड़े - बड़े परिवर्तनों का दौर रहा है। इस दौर में आश्चर्यजनक रूप से जय सियाराम और सीताराम का नाम जाप करने वाली इस धर्मभीरु देश की जनता के बीच धर्म के नाम पर कई चीजे चल रही थी। अर्थव्यवस्था के स्तर पर देश एकदम अलग प्रकार की परिस्थितियों से गुजर रहा था। तत्कालीन नरसिंह राव सरकार में वित्तमंत्री और आज के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने पद संभालने के दो महीने के भीतर ही जब पहला बजट पेश किया था, तब भारत के पास इतनी विदेशी मुद्रा नहीं थी कि वह दो हफ्ते के आयात का भी खर्च बर्दाश्त कर सके। मिश्रित अर्थव्यवस्था की बुनियाद खोखली हो चुकी थी और सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनियाँ लगातार घाटे में चल रही थी। अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष और वर्ल्ड बैंक जैसी पूँजीवादी अर्थव्यवस्था समर्थक संस्थाओं को जैसे इसी दिन का इंतज़ार था। कर्ज के साथ - साथ उनकी शर्तों को मानना और अर्थव्यवस्था को बाहरी पूँजी के लिए खोलना - देश के सामने यह एक विकल्पहीन स्थिति थी।

भूमंडलीकरण के दो आतंरिक पहलू हैं – निजीकरण और उदारीकरण। आर्थिक स्तर पर जब वैश्वीकरण को स्वीकार कर लिया गया तो उसके अगले कदम के रूप में उदारीकरण और निजीकरण बढ़ता गया और हर चीज को लाभ - हानि के नजरिए से देखने वाला पूँजीवाद वर्ग धीरे - धीरे भारतीय अर्थव्यवस्था में अपनी पैठ बनाने लगा। पिछले बीस - पच्चीस सालों में भारतीय समाज के खान - पान, वेशभूषा और सोचने और बोलने के अंदाज़ में जितना फर्क आया उससे इस बात की पुष्टि होती है कि स्थानीयता के विरुद्ध वैश्विकता का यह अभियान कितनी तेजी से चल और फ़ैल रहा है। गौरतलब है कि उदारीकरण की शुरुआत के बाद तमाम प्रसार माध्यमों में जिस तरह हिंसा और सेक्स का गुणगान हो रहा है वह इसी वैचारिकता की उपज है और इस समय के सत्य को स्थपित करती है।

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया भारत देश में हालांकि शुरू तो आर्थिक स्तर पर हुई, लेकिन निजीकरण और उदारीकरण की प्रक्रिया तेज होने के बाद इसका असर किस तरह से पूरी सामाजिक और सांस्कृतिक सरंचना पर दृष्टिगोचर होने लगा इसकी पहचान पंकज मित्र की कहानियों में की जा सकती है। उनकी कहानियों में भूमंडलीकरण के प्रभाव में एक तरफ

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

अंग्रेजी बोलने की कोशिश करने वाली नई पीढ़ी है, जो अभी ग्लोबल बनने की प्रारंभिक अवस्था में 'ओ शिट' की राह पर चल पड़ी है - अपने भीतर के उस स्थानीयता से बेखबर जिसके कारण 'ओ शिट' का अर्थ जानने के बाद उनके समक्ष स्नान करने की बात आ सकती है, तो दूसरी ओर वह पीढ़ी है जिसके लिए हालाँकि पहले भी अंग्रेजी 'गिटिर - पिटिर' से अधिक कुछ नहीं थी, पर उदारीकरण के बाद की अंग्रेजी और 'ओ शिट' को देखकर उन्हें लगता है कि अब सब कुछ बेकार ही जा रहा है। भूमंडलीय स्वप्न को देखने और समझने के लिए भूमंडलीय भाषा को जानना जरुरी है वह भाषा है अंग्रेजी। जिसमें पारंगत होने के लिए उदारीकरण के बाद गली - मुहल्लों में 'साठ दिनों में फर्राटेदार सिखाने वाले निजी कोचिंग संस्थानों और बच्चो को पढाने के लिए अंग्रेजी माध्यम के कान्वेंट स्कूलों की संख्या जिस रफ़्तार से बढ़ी है, उस पर गौर करने की अधिक जरुरत है। अंग्रेजी के प्रति ऐसी ललक हालाँकि भारतीय जनमानस में आजादी के वर्षो पहले मैकाले द्वारा प्रत्यारोपित किया गया था, जिसे कंप्यूटर के आगमन ने और ज्यादा बढ़ाया दिया। परन्तु भूमंडलीकरण के आगमन के बाद अचानक यह 'गिटिर - पिटिर' की भाषा सफलता की अनिवार्यता की भाषा बन गई। स्थानीय भाषा में शिक्षित व्यक्ति को भी कंप्यूटर और अंग्रेजी ने दोबारा अशिक्षित बना दिया क्योंकि मापदंड ऐसा बन गया या माना जाने लगा कि जो अंग्रेजी और कंप्यूटर में शिक्षित होगा उसे ही नौकरी और समाज में उचित स्थान प्राप्त हो पायेगा। पंकज मित्र की कहानियों में आर्थिक प्रभाव को हम नीचे दिए गए उद्धरणों के माध्यम से बड़ी सरलता से समझ सकते हैं कि किस तरह वैश्वीकरण और बाजारवाद के प्रसार और प्रभाव के कारण बड़े शहरों का प्रभाव छोटे शहरों और गाँवों पर कितना तेजी से बढ़ रहा है - 'वह एक छोटे शहर का बड़ा क्विजमास्टर था। इसे छोटा शहर इसलिए कहा जाता है क्योंकि अभी भी यहाँ अंग्रेजी में बात करने को गिटिर पिटिर करना कहा जाता था और अंग्रेजी बोलने वाले का मुंह भकर - भकर देखा जाता था।'

पिछले कई वर्षों में हर छोटे शहर में कुछ बदलाव आए थे जिसे कई लोग 'पोजिटिव चेंज' कहते थे और कई लोगों का यह मानना था कि 'सबकुछ तेलहंडे में जा रहा हैं।'

'अरे गोली मारिये गेम - उम को...पैसा कमाइये पैसा। बरेन है तो बरेन से कमाइये - जो चीज है आपके पास उसी से

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

कमाइये। अगल - बगल देखते नहीं हैं का ?..जो है रख दीजिये बाजार में - फटाक देनी उड़ जाएगा।'

'पर अब वह न तो श्योर था, न कॉन्फिडेंट, न पक्का और उसके पुरे वजूद को एक छोटे शहर के अदने क्विजमास्टर के रूप में लाँक कर दिया गया था।'

पंकज मित्र की प्रस्तुत कहानी 'क्विजमास्टर' जिस कथा - भूमि से ताल्लुक रखती है वह गुलामी के दौर में सामंतवाद से शोषित और उत्पीडित होता रहा और आजादी के बाद कुशासन, गरीबी और जातिवाद के कारण परेशान रहा। उस समाज में भूमंडलीकरण के बाद समग्र विकास के लिए कोई बदलाव नहीं होता,बड़े बाजार के दोहन के लिए तेजी से बदलाव होने लगता है। विडम्बना देखिए कि क्विजमास्टर की कथा - भूमि के लोगों को राजनितिक आजादी के कई वर्षों के बाद आज भी साफ़ पेयजल उपलब्ध नहीं, मगर यहाँ के गाँवों तक में पेप्सी और कोक की विराट उपस्थिति बाजारवाद की हकीकत है। पानी बेचनेवाली बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रचार की यह सबसे बड़ी कामयाबी है कि पानी के बारे में जितनी कथित जागरूकता आज लोगों के मस्तिष्क में है, उतनी और वैसी जागरूकता क्या भूमंडलीकरण की प्रक्रिया शुरू होने से पहले थी ? प्याऊ और सदाव्रत बांटने की परंपरा वाले देश में लोगों ने इसके पहले यह नहीं सोचा था कि पानी भी एक अच्छा उत्पाद है और इसकी बिक्री से करोडो कमाया जा सकता है? यह उदारीकरण और निजीकरण के बाद भारतीय बाजार में आई बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा निर्मित नए बाजार की हकीकत है। पानी तो पानी इस कहानी के ट्यूशन चैम्पियन शर्मा जी कहते हैं, 'अरे गोली मारिये गेम – उम को...पैसा कमाइये। जो चीज है आपके पास उसी से कमाइये। अगल - बगल देखते नहीं हैं का ?...जो है रख दीजिये बाजार में - फटाक देनी उड़ जाएगा।

'जो है वही रख दीजिये बाजार में वाली मानसिकता उदारीकरण या कहें उधारीकरण से पहले के समाज में नहीं थी। आदमी की और आदमी की डिग्री की कीमत उसके पैसे से तय करने वाली इस मानसिकता की उपस्थिति अंशतः पहले भी समाज में थी, पर पहले इस समाज के एक प्रतिनिधि मि. शर्मा जैसे ट्यूशनखोरों की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि वे मिस्टर कुमार जैसे लोगों को इस अश्लीलता से 'जो है वही रख दीजिये बाजार में 'की कथित' नेक सलाह' प्रस्तुत करते हैं। पूँजीवाद जब अपने चरम पर होता है तो हर औरत को विद्या बनने के लिए लालायित करता है। खुले बाजार और मुक्त

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

अर्थव्यवस्था का यह दर्शन कि 'जो है वही रख दीजिये बाजार में - फटाक देनी उड़ जाएगा आज अपने चरम पर पहुँच रहा है। प्रकारांतर यह उसी बात की ओर इशारा है कि यदि कुछ नहीं तो देह तो है और यह अकस्मात् नहीं कि इस मुक्त बाजारवादी व्यवस्था के आगमन के बाद देश में देह व्यापार का ग्राफ पहले से कई गुना अधिक बढ़ गया है।

पूंजीवादी व्यवस्था में पैसे के आगे किसी चीज की कोई कदर कोई मोल नहीं। इस व्यवस्था में वही डिग्री और वही योग्यता गणनीय स्वीकार्य है जिससे पैसे खींचें जा सके। मगर जब व्यक्ति पैसा खींचने की योग्यता रखकर भी पैसे के प्रति अनासक्त बना रहें और आदर्शवाद को साइन से चिपकाये रहें,तो वह 'क्विजमास्टर' के कथा - नायक मिस्टर कुमार की तरह हर जगह हाशिए पर फेंक दिए जाने के लिए अभिशप्त हो जाता है। क्योंकि मिस्टर कुमार के पास भूमंडलीकरण की भाषा अंग्रेजी की पूँजी है, वे अंग्रेजी के अध्यापक है और यदि वे चाहें तो बच्चों को अंग्रेजी का ट्यूशन पढ़ाकर दोनों हाथों से धन बटोर सकते हैं। मगर धन बटोरना तो दूर क्विज्मास्टरी करने के शौक़ीन मिस्टर कुमार अनियमित और महज कुछ प्रतिशत मिलने वाले वेतन के पैसे से अध्ययन सामग्रियां खरीद - खरीदकर अपना सामान्य ज्ञान मजबूत करते रहते हैं और बतौर क्विजमास्टर मुफ्त में जगह - जगह क्विज़ की एकरिंग करते हैं। क्योंकि बकौल मिस्टर कुमार,

'ये सब पैसे के लिए थोड़े ही करता हूँ। शौक है बस।' (पृ. १७)

उनके इस शौक का दूसरा पहलू यह है की स्कूल, कालेजों में क्विज़ कांटेस्ट के नाम पर उड़ाने के लिए पैसों की कोई कमी नहीं। मिस्टर कुमार के कुलपति महोदय कहते हैं,

'खर्च की कोई चिंता नहीं, बट इट शुड बी ए रियली बिग - बिग शो।' (पृ.२१)

पर अपने शौक और आदर्श के हाथों ही मिस्टर कुमार मारे जाते हैं - धन और परिवार दोनों मोर्चे पर। आयोजन में होने वाले खर्चे के लिए आयोजकों के पास पैसे की कोई चिंता नहीं, मगर मिस्टर कुमार के लिए इन खर्चों में कुछ भी नहीं - न कोई मानदेय, न कोई मार्ग व्यय। पर उन्हें इस बात का कोई मलाल नहीं होता,क्योंकि वे खुद को प्रोफेशनल क्विजमास्टर नहीं मानते।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

क्विजमास्टर के रूप में विख्यात मिस्टर कुमार अंगेजी के अध्यापक होने के बावजूद पारिवारिक मोर्चे पर लगातार धनाभाव झेलते हैं और इस मोर्चे पर उनका सारा ज्ञान गायब हो जाता है। उनकी नौकरी कैसी थी, देखिए, 'नौकरी क्या थी पूरी की पूरी मार्किंग की शर्तोंवाली - अगर आप फलां - फलां जात के नहीं हैं तो आपका फलां - फलां समस्याएं भुगतनी पड़ेगीं,अगर फलां - फलां के चरणचंपन नहीं करते हैं तो फलां - फलां चीजों से हमेशा वंचित रहेंगें।

'क्विजमास्टर्स डिसीजन इज फ़ाइनल' की तरह के भी कई प्रतिबन्ध थे - मसलन, समय पर तनख्वाह के बारे में कुछ बोलना 'कुफ्र बकना'था और बनिए हमेशा बदलते रहने पड़ते थे।'(पृ.१५)

तत्कालीन बिहार की उच्च शिक्षा के यथार्थ से परिचित हुए बिना इस प्रसंग को ठीक - ठीक नहीं समझा जा सकता। जगन्नाथ मिश्र के मुख्यमंत्रित्व काल में जो वित्तरहित शिक्षा निति लागू हुई उसका कुप्रभाव इस रूप में सामने आया कि वहाँ के विश्वविद्यालय और कोलेज के अध्यापकों का पहले तो वेतन अनियमित हुआ। फिर बाद में तीन - तीन,चार - चार महीने पर जब वेतन मिलता भी तो कुल राशि के महज तीस या चालीस प्रतिशत। ऐसे में अध्यापकों को,

'बनिये हमेशा बदलते रहने पड़ते थे। ये सवाल भी रहता था कि एक दिन जब शहर के सभी बनिये उसे उधार का राशन खिला चुके होंगें तब क्या होगा। (पृ.१५)

पूरा वेतन मिलने की बात तब सोचना भी दिवास्वप्न जैसा था और कमोबेश आज भी बिहार में यही स्थिति है। इसलिए क्विज़ प्रतियोगिता में अपनी अंग्रेजी और अपने सामान्य ज्ञान की जानकारियों से भिस को आतंकित और प्रभावित कर देने की क्षमता रखने वाले मिस्टर कुमार अर्थाभाव के कारण पारिवारिक मोर्चे पर लगातार असफल होते साबित होते हैं,इस वजह से भी क्योंकि,

'कई सवाल होते थे जिनके उत्तर उसे एकदम पता नहीं होते थे - कोई गेस नहीं - जैसे उसके दो बच्चे (एक बेटा, एक बेटी) इतनी तेजी से क्यों बढ़ रहें हैं, हर छह महीने पर ही क्यों स्कूलों में रिएडमीशन होने लगा है, हर दूसरे - तीसरे दिन स्कूलों में क्या तरह - तरह के कार्यक्रम होते हैं जिसमें दस - बीस रूपये देने पड़ते हैं शायद समयबोध गड़बड़ा रहा था इसका -

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

बनिया तीन महीने पर पैसा लेता है या छह महीने पर, दूधवाले को हर महीने पैसा देना पड़ता है क्या - ऐसे बहुत सारे सवाल थे जिसमें उसे एकदम नम्बर नहीं आते थे ...(पृ. वही)

भाषा पर पंकज मित्र का जबरदस्त अधिकार है। हर पात्र के लबो - लहजे और टोन को वे जिस गहराई और विश्वसनीयता से साधते हैं, उसका कोई सानी नहीं। इस मामले में उनकी पीढ़ी में बहुत कम ऐसे कथाकार हैं जिनका भाषा और 'कल्चरल लैंडस्कैप'पर ऐसा अधिकार हो। समकालीन कथा - परिदृश्य में हिंदी में 'इंडिया' की कहानी लिखने वाले ऐसे अनेक कथाकार हैं,जिनकी उत्तर - आधुनिक कहानियों में सबसे बड़ी समस्या के रूप में शराब,सिगरेट,गर्लफ्रेंड और उसके साथ उन्मुक्त और निर्बाध हमबिस्तरी होता है। वे हिंदी में लिखने की कृपा जरुर करते हैं पर कहानी हमेशा भूमंडलीकरण के लाभ से सर्वाधिक लाभान्वित 'इंडिया'(माफ़ कीजिये, 'इंडिया' दैट इज नॉट भारत) के तोंदियल वर्ग की लिखते हैं। उनकी पीढ़ी के संपादक - प्रिय कथाकार चमकदार भाषा तो खींच - तान कर लिख लेते हैं, मगर उनकी कुछ कहानियों को पढ़कर फ़ौरन पता चल जाता है कि इस कथाकार को न तो अपनी कथा - भूमि की जानकारी है और न वह उस कथा - भूमि के वास्तविक यथार्थ और वास्विक भाषा से परिचित है - जिसकी कहानियाँ लिखने का वह दम भर रहा है। अंग्रेजी के अखबारों और अंग्रेजी की किताबों को पढ़कर, कल्पना के आधार पर जैसा और जिस स्तर का यथार्थ और यथार्थपरक भाषा वह रच सकता है, रच लेता है। हाँ, यदि अधिकांश पाठक और विद्वान उस कथा - भूमि के वास्तविक यथार्थ से अपरिचित हों और यदि परिचित भी हों तो अप्रिय सत्य बोलने से बचते हों,तो अज्ञानता में डूबी हुई ऐसी महान प्रतिमाएँ, लम्बी समीक्षाएँ और बड़े पुरस्कार प्राप्त करती रहती हैं।

दो पंक्तियों के बीच सिर्फ कविता ही नहीं - कहानी भी होती है। कई बार कहानी को दो पंक्तियों के बीच एक कथा - भूमि का पूरा इतिहास, एक पूरी समाजिक परंपरा और दूसरी कई उपकथाएँ छिपी रहती हैं। इसलिए समकालीन कथा - आलोचना में जब एक कथाकार की कई कहानियों को मिलाकर कोई लेख सामने आता है, तो उसमें किसी कहानी के विषय में या तो सामान्यकृत बात होती है या अतिरंजित प्रशंसा। अपने पूरेपन में कोई कहानी नहीं खुल पाती है। जिस वजह से कई बड़ी और मुख्य बातें भी रह जाती हैं। तो दो पंक्तियों के बीच छिपे अर्थों और उपकथाओं का भला क्या कीजिएगा ! मसलन

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

फणीश्वरनाथ रेणु की अमर प्रेम कहानियाँ 'रसप्रिया' और 'तीसरी कसम उर्फ़ मारे गए गुलफाम में चलती हुई मुख्य कथा के दो पंक्तियों के बीच - बीच में पात्रों के अतीत से जुड़ी हुई जो कुछ पंक्तियाँ आती है और तेजी से गुजर जाती है - जिसे बिल्कुल ठहरकर पढना पड़ता है, टुकड़े - टुकड़े को जोड़कर तरकीब देकर पढने के बाद जो कहानी खुलकर सामने आती है वह उससे कहीं अधिक होती है जितनी कहानी में व्यक्त की गई होती है।

पंकज मित्र की कहानी की भाषा का बारीकी से विश्लेषण किया जाए तो यह ज्ञात होता है कि अपनी कथा - भूमि और अपने कथा - पात्रों के बारे में उनके पास बहुत अधिक जानकारियाँ होती हैं। मगर उनकी सतर्क कला - साधना का यह सबसे बड़ा प्रमाण है कि उन्हें यह पता रहता है कि यदि वे तमाम जानकारियों के चित्रण के मोह में पड़े, तो सही उद्देश्य से ही भटक जाएँगें। इनकी कहानियों में मुख्य कथा के बीच उस लैंडस्कैप और पात्रों के अतीत की सूचनाएँ बहुत संक्षिप्त रूप में आकर गुजर जाती हैं। इसलिए उनकी कहानियों के मूल्यांकन में यह चुनौती लगातार बनी रहती है कि उनकी कई कहानियों को एक साथ मिलकर की गई सामान्यीकृत विवेचना में उन बारीक तंतुओं की अनदेखी न हो जाए, जिसके कारण उनकी कथा - भाषा में व्यक्त कहानी से अधिक अव्यक्त कहानी के भाव मौजूद होता है।

भूमंडलीकरण की सैद्धांतिकी की सफलता पर कई विवेचक बहुत खुश होते हैं कि इस कहानी के मिस्टर शर्मा के लिए विद्यार्थी की हैसियत एक कस्टमर की है और वे शिक्षा के बाजार - तंत्र के खिलाडी हैं। वे इस भूमंडलीकृत यथार्थ से अवगत हैं कि बाजार में अंग्रेजी की मांग ज्यादा है इसलिए वे मिस्टर कुमार के यहाँ भेज देने का आश्वासन देते हैं। इत्तफाक से ट्यूशन के लिए इंटर में पढ़ने वाला कस्टमर यानी छात्र आता है, दरवाजा खुलने के साथ मिस्टर कुमार के अजनबी निगाहों और सवालनुमा 'यस' से डर जाता है। लड़का कहता है, 'प्रणाम सरल आय...आय ...वांट ट्यूशन।' जवाब में मिस्टर कुमार का सवाल है, 'व्हिच कोर्से ?' तो अंग्रेजी में बोलने को 'गिटिर - पिटिर' और 'सबकुछ तेलहंडे में जा रहा है' मानने वाले कसबे के इंटर का वह छात्र निम्न मध्यमवर्गीय घबराहट में बोलता है, 'इंटरकोर्स'। यहाँ अंग्रेजी - आक्रांत मानस का प्रतिनिधित्व करने वाले इंटर का वह छात्र अपने जवाब से थोड़े देर के लिए अंग्रेजी ज्ञान - संपन्न वर्ग के सामने हंसी का पात्र भले बन जाए, मगर उस पर हँसने के बाद उसके प्रति करुणा उपजती है और उसपर दया आती है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

चार्ली चैप्लीन ने कहा है कि व्यंग्य घोर करुणा की खोज से पैदा होता है। इसलिए यहाँ ठहरकर दो पंक्तियों के बीच में झांक रही अंतर्कथा को देखना आवश्यक है।

हिंदी प्रदेश के विशुद्ध कस्बेनुमा छोटे शहर में मिस्टर कुमार क्यों 'यस' बोलते हैं और इंटर में पढ़ने वाला वह किशोर अंग्रेजी की पूरी जानकारी न होने के बावजूद मिस्टर कुमार से क्यों अंग्रेजी में बोलने की कोशिश करता है? असल में छोटे शहरों में अंग्रेजी का आतंक कुछ ज्यादा ही रहता है और आम तौर पर अंग्रेजी अध्यापक कक्षा में और कक्षा के बाहर इस दलील के साथ छात्रों से अंग्रेजी में ही बात करने की हठधर्मी करता है कि इससे बच्चे अंग्रेजी सीख पायेंगें। बच्चे बेचारे इसलिए जैसे - तैसे सोच - सोचकर, हिंदी में सोचे गए वाक्य का अंग्रेजी में ट्रांसलेट करके खुद को अंग्रेजी में अभिव्यक्त करने की कोशिश करते हैं कि अंग्रेजी के सर या मैडम नाराज न हो जाएँ...और अंग्रेजी का अध्यापक यदि नाराज हो गया तो वे इस प्रभुभाषा के प्रसाद से वंचित हो जायेंगें।

मिस्टर कुमार की भी हालत निराला की तरह है -'जाना तो पर रहा सदा संकुचित' अपने मध्यमवर्गीय आदर्श से चिपके हुए अर्थोपार्जन के लिए मिस्टर कुमार मगर पत्नी प्रीति और पड़ोसी मिस्टर शर्मा के सहयोग से ट्यूशन पढ़ाना शुरू करते हैं। ट्यूशन जब शुरू किया तो,

'सुबह पाँच बजे से ही सिलसिला चालू होता तो कोई स्पोकन, कोई ग्रामर, कोई इंटर तो कोई आनर्स, कोई अंग्रेजी की टूटी - टांग जुडवाने तो कोई टांकें लगवाने...हम हैं कूचा - ओ - बाजार की तरह।' (पृ.१९)

पहले तो क्विजमास्टर मिस्टर कुमार की मानसिकता ये थी कि 'किस - किसकी हाजत - रवा करे कोई', मगर अब हालत ये है कि वे जो है वही रख दीजिये बाजार में' की सैद्धांतिक के तहत 'अपना बरेन' बाजार में रखकर खरीदारों को को निपटाने लगते हैं - जैसे सैक्स - वर्कर के पास जैसा जो ग्राहक आए, वह सबको अपने प्रोफेशन की जरुरत के अनुरूप बखुशी निबटाती है।

अपनी सैद्धांतिकी के अनुरूप पूँजीवाद किसी एक बिंदु पर आकर ठहरना नहीं चाहता। उसकी धनाकांक्षा और भौतिक

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

लालसाएं लगातार बढ़ती रहती हैं, पश्चिमी वैचारिकी से उत्पन्न इस पूंजीवादी अनंत - आकांक्षा का भारतीय दर्शन की 'संतोषं परम सुखं' से भले कोई मेल हो सकता है! साक्षात 'भूमंडलीकरण' के असली प्रतिनिधि मिस्टर शर्मा जब मिस्टर कुमार को अंग्रेजी के कस्टमर भेज - भेजकर अपनी ट्यूशनिया बिरादरी में शामिल करने में कामयाब हो जाते हैं, तो उन्हें सलाह देते हैं, 'क्या कुमार साहब! कल का एपिसोड देखे थे के. बी. सी. (कौन बनेगा करोडपति) का। एभरेज इंटेलीजेंसी का आदमी - और साला पचास लाख रूपया जीत लिया, ईगो साला हम लोग हैं - दिनरात भेड़ - बकरी चराओ तब जाके खाने - पिने भर होता है। सब साला किस्मत हैं।' (पृ.२०) हमने इस लेख की शुरुआत में भूमंडलीकरण की जिस प्रमुख प्रवृति यकसांपन की बात की थी,वह इस कहानी में देख सकते हैं। धनोपार्जन में संलिप्त ट्यूशनियाँ बिरादरी से अलग रहने वाले मिस्टर कुमार जब इस बिरादरी में बाकायदा शामिल हो जाते हैं,तो उन्हें के.बी.सी.में अपना ज्ञान - कोष भुनाने की सलाहें मिलनी शुरू हो जाती हैं। धन जब आने लगे,ज्ञान जब कमासुत - धनासुत साबित हो जाए तो फिर और - और की अंतहीन पूंजीवादी पुकारें शुरू हो जाती है। मगर अभी तक मिस्टर कुमार के जहन में कहीं - न कहीं क्विज्मास्टरी का ख्वाब बाकी है। इसलिए मिस्टर कुमार ने'कुछ भी न कहा,न अहो न अहा।' शर्मा की सलाह पर वे संक्षेप में महज'हूं' करके रह जाते हैं।

क्विजमास्टर मिस्टर कुमार व्यवस्था और आदर्श के आलावा उन चतुर - सुजान लोगों द्वारा भी शोषित होते हैं और हाशिए पर धकेले जाते हैं, जिनके लिए क्विज़ जैसे कार्यक्रमों का आयोजन 'दीज आर ऑल इन्भेस्टमेंट' है। क्विजमास्टर जिस कथा - भूमि से सम्बद्ध कहानी है उस कथा - भूमि के चतुर - सुजान अपना काम निकलवाने के लिए गधे को बाप ही नहीं, अपना पूर्वज भी बताने के लिए विख्यात रहें हैं। मतलब साधने के लिए लोग थाने के मामूली चौकीदार को खुश करने और अपने हिमायत में काम करवाने के लिए उसे 'दरोगा साहेब' कह सकता है, तो काम न होने पर हिकारत दिखने के लिए पुलिस महानिदेशक स्तर के पुलिस अफसर को महज कोतवाल कहकर उसकी औकात घटाने की कोशिश कर सकता है। इस सामाजिक पृष्ठभूमि को जानने के बाद अब देखिए कि क्विजमास्टर मिस्टर कुमार की अंग्रेजी की 'फूलूएंसी' के सामने। सिद्धार्थ बसु को वे साहिबान देल कर रहें हैं, जिन्हें मिस्टर कुमार में मुफ्त के

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

क्विजमास्टर की पूरी योग्यता नजर आती है। ध्यान रखिए ये वही क्लास है, जो पुलिस महानिरीक्षक स्तर के बड़े पुलिस अधिकारी को महज कोतवाल में रिड्युस कर सकता है। इस क्लास के एक सशक्त प्रतिनिधि भुलान्शील प्राणी कुलपति महोदय हैं। मिस्टर कुमार जैसे के प्रति दिले बेरहम कुलपति की व्यावहारिक सचाई यह है की

'क्विज़ प्रतियोगिताओं में मुख्य अतिथि के रूप में शाबाशी दे चुकने के बावजूद वह उसका नाम भूल जाते थे।' (पृ.२०)

लेकिन चौकीदार को दरोगा कहने वाली मानसिकता का सजीव नमूना यह है कि कुलपति को जब आजादी की पचपनवीं सालगिरह पर विश्वविद्यालय में क्विज़ कार्यक्रम कराना होता है तो वे मिस्टर कुमार का न नाम भूलते हैं और न यह भूलते हैं कि उनसे काम क्या लेना है। एक बार फिर इस काइयांपन पर गौर करने की जरुरत है कि मिस्टर कुमार की अंग्रेजी की 'फ्लूएंसी' स्कूलों,कालेजों के उन्हीं प्रिंसिपल साहिबानों को बेहतर नजर आती है जिनको उनमें एक मुत का क्विजमास्टर नजर आता है और सभाओं - आयोजनों में अक्सर उसका नाम भूल जाने वाले भुलनशील कुलपति महोदय काम के वक्त उसका नाम बिल्कुल नहीं भूलते। मिस्टर कुमार के विश्वविद्यालय के कुलपति का प्रस्ताव है कि एच.आर.डी.की तरफ से सेलेब्रेशन के लिए कुछ पैसा आया था। क्यों नहीं हम एक ग्रैंड क्विज़ का आयोजन करें। सब्जेक्ट होगा इंडियन फ्रीडम मूवमेंट।' (पृ.२०)

अंग्रेजी द्वारा निर्मित भारतीय सत्ता सरंचना की यह अजीब लेकिन त्रासद सच्चाई है कि किसी अधिकारी या संस्थान के प्रमुख को लोक सेवक या जनता का सेवक कहकर या मानकर ऊपरी तौर पर हम भले खुश हो लें,पद की मूल सरंचना के हिसाब से वह स्वयं को जनता का सेवक नहीं,माई - बाप समझता है। कुलपति अपनी बात कहने या काम सुझाने के बाद इस तरह एक ख़ास एंगल में देखने लगते हैं कि सामने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व और उपस्थिति दोनों की कोई उपादेयता अब उनके लिए नहीं रही। 'वक्त का ज्यादातर हिस्सा वह इसी एंगल पर देखते हुए बिताते और खासकर जहाँ दूसरों को सुनने के नौबत आती थी वहाँ यह एंगल और बढ़ता ही जाता।'(पृ.२१) सो मिस्टर कुमार को काम सुझाने के बाद जैसे ही कुलपति महोदय माई - बाप वाले एंगल से देखना शुरू करते हैं,वह समझ जाता है कि अब उसकी जरुरत फिलहाल नही है

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

। जरुरत अब क्विज़ वाले दिन होगी। पर क्विज़ वाले दिन ही इस कथा की असली त्रासदी घटित होती है।

मुक्त बाजारवादी व्यवस्था में बदलाव की गति बेहद तेज होती है। आज जो नया है,कल पुराना पड़ जाता है। आर्थिक उदारीकरण के दौर में जब 'नालेज इज पावर' का नारा दिया जाता था,तब सुचना - क्रांति का वह रूप नहीं था जो आज आम है। सूचनाओं और नालेज तक सबकी पहुँच नहीं थी और सबकी पहुँच बनाने और चौकाने के लिए शुरूआती दौर में जगह - जगह आयोजन किया जाता था। इस तरह के कार्यक्रम में खूब भीड़ जुटती थी और लोगों के बीच इसे अपार लोकप्रियता हासिल होती थी। मगर इन्टरनेट,मोबाइल और तमाम तरह के टीवी चैनलों के आगमन के बाद सूचनाओं पर कुछ ही लोगों का अधिकार नहीं रहा। अब आम लोगों तक तमाम सूचनाओं की पहुँच हो गई। 'कौन बनेगा करोडपति' जैसे कार्यक्रम ने आम लोगों को बीच इस सपने का बीज बोया कि वे ज्ञान और सुचना के दम पर महज कुछ सवालों के जवाब देकर करोडपति बन सकता है। पहले हम बात कर आए हैं कि इस सैद्धांतिकी का ख़ास दर्शन है - किसी भी तरह जल्दी - से - जल्दी आमिर बनो। सो अभाव और दारिद्रय के मारे निम्न मध्यवर्ग और मध्यवर्ग के लोगों के बीच इस कार्यक्रम को गजब की लोकप्रियता हासिल हुई। 'कौन बनेगा करोडपति' में जब एक जिलाधिकारी की बीवी गुरप्रीत कौर हाट सीट पर विराजमान होती है, तो मुफ्त में जगह - जगह क्विज़ कार्यक्रम की एकरिंग करने वाले मिस्टर कुमार की पत्नी प्रीति व्यंग्य - बाण छोड़ती है,'बड़े लोग भी पैसे के पीछे हैं। अब देखो कहीं के कलक्टर की बीबी थी। ...अब क्या जरुरत है भाई। बस भाग रहें हैं पैसे के पीछे।'((पृ.२३) यह गुरप्रीत कौर दरअसल वह लड़की है जो कालेज में मिस्टर कुमार के साथ पढ़ती थी। जिसके लाल जर्सी के अन्दर के कबूतर को कुमार कभी दाना चुगाने का ख्वाब देखा करता था। पैसे को लेकर कालेज के दिनों में गुरप्रीत का कहना था,'मनी इज ऐ गुड सर्वेंट बात ऐ बैड मास्टर।' 'उस गुरप्रीत का जब जिक्र इतने बरसों बाद उसकी पत्नी से केबीसी के बहाने करता है,तो वह इस बात से सर्वथा अनजान होती है कि गुरप्रीत और उसके पति कुमार के बीच कभी कुछ रहा था। बहरहाल,इस कार्यक्रम के शुरू होने के बाद न केवल बड़े शहरों बल्कि छोटे शहरों और कस्बों में भी क्विज़ कार्यक्रम की लोकप्रियता अपने ढ़लान पर पहुँच गई। ऐसे ही दौर में कुलपति महोदय क्विज़ के लिए मिस्टर कुमार को याद करते हैं और ग्रैंड क्विज़ कांटेस्ट करने का भार सौंपते है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

जिस दिन कार्यक्रम है उस दिन पुष्पगुच्छ प्रदान, भाषण, आशीर्वचन की प्रक्रिया पूरी होते - होते रात के नौ बज जाते हैं और इस समय तक कार्यक्रम में कोई व्यवधान नहीं होता। मगर मिस्टर कुमार जैसे ही क्विज़ कार्यक्रम के लिए माइक थामते हैं, बिजली गुल हो जाती है। बिजली गुल होने के बाद शुरू होता है अँधेरे में तरह - तरह की फब्तियों का दौर। थोड़ी देर बाद जब बिजली आती है तो ख़ास शासकीय एंगल से लोगों को देखने के आदि कुलपति उठ खड़े होते हैं, सॉरी! मैं रूकता ... लेकिन ... आप जारी रखिए...द शो मस्ट गो ऑन।' (पृ. २२) कुलपति पुष्पगुच्छ का आदान - प्रदान कर चुके थे, एच.आर.डी. के फंड को निपटाने की असली प्रक्रिया पूरी हो चुकी थी, लिहाजा ये चले जाते हैं।

कार्यक्रम की समाप्ति के बाद जब मिस्टर कुमार घर आते हैं तो उनकी पत्नी के पास पहले से पडोसी मि.शर्मा का मोबाइल है। जिससे केबीसी में फोन लगाने के लिए वह उससे इसरार करती हैं। यह पता चलने के बाद कि मोबाइल शर्मा का है। कुमार कहता है,'मुझे नहीं लगाना है नंबर – उंबर।' जवाब में उसी की क्विजमास्टरी वाली भाषा में प्रीति व्यंग्य से मुस्कराती है,श्योर ?'कुमार श्योर नहीं था,हो भी नहीं सकता था - क्योंकि ट्यूशन पढ़ाने को हिकारत से देखने वाले मिस्टर कुमार जिस दिन ट्यूशन शुरू करते हैं,दरअसल उसी दिन बाजार उनके शयनकक्ष में प्रवेश कर चूका था - इसके बावजूद जैसे उसके भीतर आदर्श और मध्यमवर्गीय नैतिकता कुछ हद तक बाकी है। इस कहानी की त्रासदी भी यही है कि सत्ता और समाज द्वारा हाशिए पर डाल दिए जाने के बावजूद कुमार भूमंडलीय यथार्थ से आँखे चुराते हैं। जबकि हकीकत यह है कि केबीसी में फोन लगाने से इनकार करने के बावजूद,'अब वह न तो श्योर था,न कॉन्फिडेंट,न पक्का और उसके पुरे वजूद को एक छोटे शहर के अदने क्विजमास्टर के रूप में लाँक कर दिया गया था। सिर्फ और सिर्फ उसका सात साल का बेटा मयंक ही उसे अभी भी एक बड़ा क्विजमास्टर समझता था।'(पृ.२४)

पहले भी मिस्टर कुमार को उन्हीं स्कूलों - कोलेजों के प्रिंसिपल और आयोजक क्विजमास्टर समझते थे, जिनको वे मुफ्त में उपलब्ध थे। 'कौन बनेगा करोडपति' के आने के बाद मुफ्त में उपलब्ध मिस्टर कुमार को अँधेरे में जब इन दब्तियों का सामना करना पड़ता है, 'चल बे! अमितभवो से बड़का कुईज मास्टर हौ का बे?' कई करोड़ मिलतौ एकरा में?'अपने मध्यमवर्गीय आदर्श और नैतिकता के कारण मुफ्त में मिस्टर कुमार भले उपलब्ध हों, अब मुफ्त में श्रोता

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

भी,उपलब्ध नहीं। श्रोता भी अब यह सवाल पूछने लगा है कि'कै करोड़ मिलतौ एकरा में ?' मिस्टर कुमार को सत्ता और बाजार दोनों रौंदकर आगे जा चूका है, पर वे हैं कि भूमंडलीय यथार्थ को लेकर अब भी न श्योर हैं न कॉन्फिडेंट - यही भ्रम आर्थिक सत्ता द्वारा रौंदे गए भारतीय मध्यवर्ग की त्रासदी का भूमंडलीय यथार्थ है।

१९९० के बाद इस देश में जो नीतिगत परिवर्तन हुए जैसे उदारीकरण के नाम पर भारतीय अर्थव्यवस्था को खोलने का, मंडल कमीशन की सिफारिशों को लागू करने का, बाबरी मस्जिद के ध्वंस के नाम पर सांप्रदायिक उन्माद को पैदा करने का, इन सबों ने मिलकर बहुत तेजी से 'जन के मानस और स्वभाव' में एक किस्म के बदलाव की जमीन तैयार की। इन बदलाओं ने आकर ग्रहण करती पीढ़ियों के नए ढंग से संस्कारित किया। पंकज मित्र इसी देश - काल के सन्दर्भ में बदलते मनुष्य और उसकी भंगिमाओं को रेखांकित करनेवाली कहानियों के प्रणेता हैं। समकालीन आलोचना की प्रचलित शब्दावली में इसे ऐसे समझें कि १९९०के बाद उदारीकरण, निजीकरण, भूमंडलीकरण के द्वारा जिस भूमंडलीकरण को हवा दी गई। पंकज मित्र इसी से उपजी 'भूमंडलीकरण' के दौर में आई कहानीकार पीढ़ी के अगुआ हैं। उदारीकरण, निजीकरण, मंडलीकरण के सामजिक – राजनितिक – आर्थिक - धार्मिक प्रभाओं को सम्मिलित और एकल रूप में अनिवार्यतः पंकज मित्र की कहानियों में लक्ष्य किया जा सकता है।

'क्विजमास्टर' में पहली बार झारखण्ड के हजारीबाग और चतरा आदि के आस - पास बोली जानेवाली 'खोरठा' की छटा दिखती है। इस भाषा के टटकेपन और उसकी मारक क्षमता का पुरजोर इस्तेमाल पंकज मित्र की आगामी कहानियों का स्थायी भाव बन जाता है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

सन्दर्भ सूचि:

(१) मित्र, पंकज, 'क्विजमास्टर'(क.), 'क्विजमास्टर और अन्य कहानियाँ, आधार प्रकाशन, पंचकूला, संस्करण -२०११, पृष्ठ – ९

(२) वही, पृष्ठ – १४

(३) वही, पृष्ठ – १५

(४) वही, पृष्ठ – १७

(५) वही, पृष्ठ – १९

(६) वही, पृष्ठ – २०

(७) वही, पृष्ठ – २१

(८) वही, पृष्ठ – २२

(९) वही, पृष्ठ – २३